DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

7 March, 2024

कोयला गैसीकरण योजना

संदर्भ: *कोयला मंत्रालय ने भारत में कोयला गैसीकरण संयंत्र स्थापित करने के लिए इच्छुक सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों और निजी निवेशकों से इनपुट लेने हेतु प्रस्तावों के लिए अनुरोध (RFP) के तीन मसौदे जारी किए हैं।*

➢ योजना के बारे में:

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कोयला गैसीकरण परियोजनाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 8,500 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है।
- भारत में गैसीकरण प्रौद्योगिकी के एकीकरण से प्राकृतिक गैस, मेथनॉल, अमोनिया और अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं के आयात पर देश की निर्भरता कम होने की सम्भावना है।
- सरकार ने वर्ष 2030 तक 100 मिलियन टन (MT) कोयले को गैसीकृत करने का लक्ष्य रखा है।
- इस संबन्ध में आवंटित निधियों को **तीन खंडों** में वर्गीकृत किया गया है:
- **श्रेणी I: सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों का समर्थन**:
  - सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों के लिए 4,050 करोड़ रुपये का प्रावधान।
  - इसके लिए अधिकतम 3 परियोजनाएं पात्र हैं।
  - साथ ही साथ इस हेतु अनुदान राशि ₹1,350 करोड़ या परियोजना के पूंजीगत व्यय का 15% है।
- **श्रेणी II: निजी क्षेत्र और सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों का समर्थन**:
  - इस श्रेणी के निजी क्षेत्र और सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों दोनों के लिए 3,850 करोड़ रुपये आवंटित किया गया है।
  - प्रत्येक परियोजना के लिए ₹1,000 करोड़ या पूंजीगत व्यय के 15% के अनुदान की व्यवस्था है।
  - इसके लिए कम से कम एक परियोजना के लिए टैरिफ-आधारित बोली अनिवार्य है।
- **श्रेणी III: प्रदर्शन परियोजनाएं और छोटे पैमाने के गैसीकरण संयंत्र**:

➢ कोयला गैसीकरण:

- कोयला गैसीकरण प्रक्रिया में ईंधन गैस का उत्पादन करने के लिए कोयले को हवा, ऑक्सीजन, भाप या कार्बन डाइऑक्साइड के साथ आंशिक रूप से ऑक्सीकरण करायी जाती है, जिसका उपयोग प्राकृतिक गैस और मीथेन जैसे पारंपरिक ईंधन के बजाय बिजली उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।
- कोयले का इन-सीटू गैसीकरण, जिसे भूमिगत कोयला गैसीकरण (UCG) के रूप में भी जाना जाता है; में कोयले को सीवन में रहते हुए गैस में बदलना और कुओं के माध्यम से इसे पुनः प्राप्त करना शामिल है।
- गैसीकरण प्रक्रिया कोयले को सीधे जलाने के बजाय आंशिक ऑक्सीकरण के माध्यम से कोयले में मौजूद सभी कार्बन को बिजली, हाइड्रोजन और अन्य ऊर्जा रूपों में बदल देता है।
- यह सिनगैस का उत्पादन करता है, जो मुख्य रूप से मीथेन, कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड और जल वाष्प से बना होता है, जिसे विभिन्न उर्वरकों, ईंधन, सॉल्वैंट्स और सिंथेटिक सामग्री में परिवर्तित किया जा सकता है।

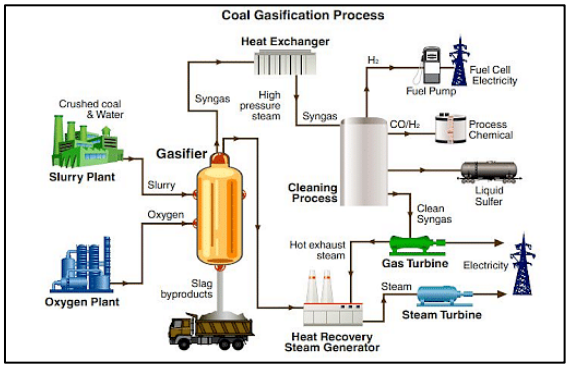

➢ कोयला गैसीकरण से सम्बंधित सरकारी पहल:

- स्वच्छ ईंधन अपनाने को बढ़ावा देने के लिए गैसीकरण के लिए उपयोग किए जाने वाले कोयले पर 20% राजस्व हिस्सेदारी रियायत की सिफारिश की गई है।
- वैश्विक निविदा के माध्यम से दानकुनी के अलावा तीन गैसीकरण सुविधाएं स्थापित करने की योजना और सिंथेटिक प्राकृतिक गैस की बिक्री के लिए गेल के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है।
- बेहतर कोयला पुनर्प्राप्ति, परिचालन लचीलेपन, बढ़ी हुई उत्पादकता, बढ़ी हुई सुरक्षा और कम लागत के लिए तकनीकी प्रगति को अपनाया जा रहा है।
- हितधारकों के बीच जागरूकता बढ़ाने और जिम्मेदारियों के साथ एक स्पष्ट रोडमैप विकसित करने के लिए कोयला मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन की स्थापना की गई है।

मीथेनसैट (MethaneSAT)

संदर्भ: *तेल और गैस उत्पादन से होने वाले मीथेन उत्सर्जन को हम कैसे समझते हैं, इसे बदलने के उद्देश्य से कैलिफोर्निया के वैंडेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से एक उपग्रह लॉन्च किया गया है।*

➢ मीथेन उत्सर्जन पर नज़र क्यों रखें?

- मीथेन एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देने के मामले में कार्बन डाइऑक्साइड के बाद दूसरे स्थान पर है।
- यह औद्योगिक क्रांति के बाद से 30% वैश्विक तापन के लिए जिम्मेदार है और 20 वर्ष की अवधि में CO_2 से 80 गुना अधिक शक्तिशाली है।
- मीथेन ओजोन निर्माण में भी योगदान देता है, जिससे वार्षिक रूप से लगभग दस लाख मौतें समय से पहले हो सकती हैं।

➢ मीथेनसैट (MethaneSAT) के बारे में:

- मीथेनसैट (MethaneSAT) को पर्यावरण रक्षा कोष (EDF) द्वारा हार्वर्ड विश्वविद्यालय, स्मिथसोनियन एस्ट्रोफिजिकल ऑब्जर्वेटरी और न्यूजीलैंड अंतरिक्ष एजेंसी के साथ साझेदारी में विकसित किया गया।
- यह दिन में 15 बार पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए मीथेनसैट मीथेन उत्सर्जन पर नज़र रखने के लिए तेल और गैस क्षेत्र की निगरानी करेगा।
- यह वास्तविक समय में उत्सर्जन स्रोतों और रुझानों पर विस्तृत डेटा प्रदान करेगा, हितधारकों और नियामकों की सहायता करेगा।

➢ मीथेनसैट की विशेषताएं:

- यह सटीक मीथेन का पता लगाने के लिए एक उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले इन्फ्रारेड सेंसर और स्पेक्ट्रोमीटर से लैस है।
- यह लगभग 200 किमी x 200 किमी के विस्तृत क्षेत्र में प्रति अरब तीन भाग जितने छोटे उत्सर्जन स्रोतों और बड़े उत्सर्जकों की पहचान कर सकता है।
- यह मिशन अपने तकनीकी भागीदार Google द्वारा विकसित क्लाउड-कंप्यूटिंग और AI तकनीक का उपयोग करके डेटा विश्लेषण किया जाएगा।
- मीथेनसैट का महत्व:
- लॉन्च विश्व स्तर पर सख्त मीथेन प्रबंधन नीतियों के कार्यान्वयन के साथ मेल खाता है।
- देशों और कंपनियों को सीओपी बैठकों में निर्धारित मीथेन कटौती लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करता है।
- उत्सर्जन डेटा को सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराकर पारदर्शिता प्रदान करता है, हालाँकि यह सीधे तौर पर प्रदूषकों को उत्सर्जन कम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता है।

➢ ग्लोबल वार्मिंग क्षमता (GWP):

- GWP कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) के समान द्रव्यमान द्वारा अवशोषित गर्मी की तुलना में वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैस द्वारा अवशोषित उष्मा को मापता है।
- यह ऊर्जा को अवशोषित करने की क्षमता और उसके वायुमंडलीय जीवनकाल के आधार पर ग्लोबल वार्मिंग पर गैस के प्रभाव को इंगित करता है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

- GWP की गणना एक विशिष्ट समय अवधि में की जाती है, आमतौर पर 100 वर्ष, यह आकलन करने के लिए कि कोई गैस CO_2 के सापेक्ष कितनी ऊर्जा अवशोषित करती है।
- उच्च GWP मान वाली गैसें ग्लोबल वार्मिंग में अधिक योगदान देती हैं क्योंकि वे प्रति इकाई द्रव्यमान में अधिक ऊर्जा अवशोषित करती हैं।
- CO_2 1 के GWP के साथ आधार रेखा के रूप में कार्य करता है, जबकि अन्य गैसों में उनकी विशेषताओं और समय सीमा के आधार पर अलग-अलग GWP मान होते हैं।
- GWP का उपयोग कार्बन डाइऑक्साइड समकक्ष की गणना करने के लिए किया जाता है, जो विभिन्न गैसों के जलवायु प्रभावों की तुलना के लिए एक मानकीकृत उपाय प्रदान करता है।
- CO_2 के सापेक्ष ग्लोबल वार्मिंग में इसके योगदान को निर्धारित करने के लिए किसी गैस के GWP को उसके द्रव्यमान से गुणा करके इसकी गणना की जाती है।

Greenhouse Gas (GHG)	Global Warming Potential (GWP)
Carbon dioxide (CO2)	1
Methane (CH4)	25
Nitrous oxide (N2O)	289
Hydrofluorocarbons (HFCs)	124 – 14,800
Perfluorocarbons (PFCs)	7,390 – 12,200
Sulfur hexafluoride (SF6)	22,800
Nitrogen trifluoride (NF3)	17,200
Adopted from Brander & Davis, 2012	

दोषयुक्त जलवायु रिपोर्ट

संदर्भ: *एफएओ की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, चरम मौसम की घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने और अनुकूलन करने की असमान क्षमता के कारण महिलाओं और युवाओं को बढ़ती गर्मी और बाढ़ से कृषि आय का सर्वाधिक नुकसान होता है।*

➤ मुख्य विशेषताएं:

- **आय हानि:**
  - बढ़ती गरमी और उसके प्रभाव के कारण गरीब परिवारों को अपनी कुल आय का 5% और बाढ़ के कारण 4.4% का नुकसान होता है।
  - बाढ़ से गरीब और गैर-गरीब ग्रामीण परिवारों के बीच आय का अंतर लगभग 21 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष बढ़ जाता है। साथ ही गर्मी के कारण प्रति वर्ष 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का अंतर देखा गया है।
  - दीर्घकालिक तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि से गरीब परिवारों की कृषि आय में 53% की वृद्धि होती है और गैर-गरीब परिवारों की तुलना में उनकी गैर-कृषि आय में 33% की कमी आती है।
- **लैंगिक असमानताएँ:**
  - पुरुष प्रधान परिवारों की तुलना में महिला प्रधान परिवारों की आय में बढ़ती गर्मी के कारण 8% और बाढ़ के कारण 3% की हानि होती है।
  - बढ़ती गर्मी का प्रभाव महिला प्रधान और पुरुष प्रधान परिवारों के बीच के आय अंतर को प्रति वर्ष 37 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ा देता है, और बाढ़ इसे प्रति वर्ष 16 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ा देती है।
  - दीर्घकालिक औसत तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के परिणामस्वरूप पुरुष प्रधान परिवारों की तुलना में महिला प्रधान परिवारों की कुल आय में 34% की कमी आती है।
- **युवा और बच्चे:**
  - वृद्ध परिवारों की तुलना में युवा लोगों की प्रधानता वाले परिवारों की कुल आय में बाढ़ के कारण 3% और बढ़ती गर्मी के प्रभाव से 6% की वृद्धि देखी गई है।
  - अत्यधिक तापमान के कारण बच्चे अपने साप्ताहिक कामकाजी समय को अधिक उम्र के वयस्कों की तुलना में 49 मिनट तक बढ़ा देते हैं, विशेषकर ऑफ-फार्म सेक्टर में।

➤ जलवायु नीति की मुख्य बातें:

- **बहुआयामी नीतियाँ**:
  - इन नीतियों और कार्यक्रमों के तहत ग्रामीण लोगों की कमजोरियों के कृषि और गैर-कृषि दोनों स्रोतों को शामिल किया जाना चाहिए।
  - उन्हें संसाधनों तक सीमित पहुंच और कम जोखिम सहनशीलता सहित कमजोर आबादी के सामने आने वाली विशिष्ट बाधाओं से मुक्त होने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- **सामाजिक सुरक्षा और सलाहकारी सेवाएँ:**
  - सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों को सलाहकारी सेवाओं से जोड़ने से पर्यावरण अनुकूलन को बढ़ावा मिल सकता है और किसानों को हुए नुकसान की भरपाई हो सकती है।
  - जलवायु सलाहकार सेवाओं और विस्तार समर्थन के साथ-साथ नकद-आधारित सामाजिक सहायता से सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकते हैं।
- **लिंग-परिवर्तनकारी पद्धतियाँ:** लिंग-परिवर्तनकारी पद्धतियाँ भेदभावपूर्ण लिंग मानदंडों को चुनौती दे सकती हैं और महिलाओं को आर्थिक निर्णय लेने के लिए सशक्त बना सकती हैं।
- **सहभागी विस्तार पद्धतियाँ:** सहभागी विस्तार पद्धतियाँ कमजोर लोगों की भागीदारी को बढ़ावा दे सकती हैं और जलवायु जोखिमों से निपटने में उनकी सामूहिक भावना को बढ़ा सकती हैं।
- **डेटा संग्रह में निवेश**: कमजोर आबादी पर जलवायु कार्यों के प्रभावों का आकलन करने के लिए अलग-अलग डेटा के संग्रह में निवेश करना आवश्यक है।

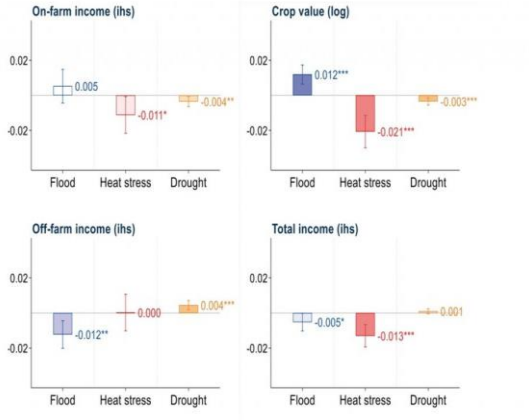

NEWS IN BETWEEN THE LINES

जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क के भीतर 6,000 से अधिक पेड़ों की अवैध कटाई की निंदा की है।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान के बारे में:

- जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क उत्तराखंड के नैनीताल जिले में एक वन्यजीव अभयारण्य है।
- इसकी स्थापना 1936 में हेली नेशनल पार्क के रूप में की गई थी और यह भारत का सबसे पुराना और सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय उद्यान है।
- यह पार्क कॉर्बेट टाइगर रिजर्व का हिस्सा है जो दुनिया का सबसे बड़ा बाघ रिजर्व है।

- यहीं से प्रोजेक्ट टाइगर पहली बार वर्ष 1973 में लॉन्च किया गया था।
- इसे छह प्रमुख अलग-अलग पर्यटन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है- बिजरानी सफारी, झिरना सफारी, ढेला सफारी, ढिकाला, दुर्गा देवी और सीताबनी बफर।
- **वनस्पति:** कॉर्बेट नेशनल पार्क साल, खैर और सिस्सू सहित पौधों की 600 से अधिक प्रजातियों के साथ घने नम पर्णपाती जंगलों आवास है।
- **जीव-जंतु:** यह तेंदुओं और जंगली बिल्लियाँ, भौंकने वाले हिरण, चित्तीदार हिरण, सांभर हिरण और स्लॉथ सहित विभिन्न अन्य स्तनधारियों का भी आवास है।

गैर घातक हथियार

हाल ही में, मालदीव ने राष्ट्रीय स्वायत्तता को मजबूत करने के लिए मुफ्त "गैर-घातक" सैन्य उपकरण और प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए चीन के साथ अपने पहले सैन्य सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए।

गैर-घातक हथियारों के बारे में:

- गैर-घातक हथियार (एनएलडब्ल्यू) ऐसे हथियार हैं जो चोट या मृत्यु को कम करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
- इनका उपयोग कानून प्रवर्तन और सेना द्वारा सुरक्षा और सुरक्षा मिशनों के लिए किया जाता है।
- इन हथियारों में बीन बैग, रबर की गोलियां, काली मिर्च स्प्रे, इलेक्ट्रिक स्टन गन, पुलिस के डंडे, आंसू गैस, वॉटर कैनन और ध्वनिक हथियार शामिल हैं।
- यह आत्मरक्षा के लिए प्रभावी हो सकता है लेकिन ये घातक हथियारों जितना प्रभावी नहीं है।

ओपेक

हाल ही में पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) के प्रमुख ने विश्वास व्यक्त किया कि संगठन आने वाले दशकों में भारत के तेल आयात का एक बड़ा हिस्सा सुरक्षित करेगा।

ओपेक के बारे में:

- पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (ओपेक) 13 तेल निर्यातक विकासशील देशों का एक अंतरसरकारी संगठन है।
- अंगोला ने 1 जनवरी 2024 से अपनी सदस्यता वापस ले ली।
- अब तक, ओपेक के कुल 12 सदस्य देश हैं (अल्जीरिया, कांगो, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, ईरान, इराक, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और वेनेजुएला)
- इसकी स्थापना सितंबर 1960 में बगदाद, इराक में पांच देशों: ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला द्वारा हस्ताक्षरित एक समझौते के साथ की गई थी।
- मिशन का उद्देश्य हानिकारक उतार-चढ़ाव को खत्म करने के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजारों में तेल की कीमतों में स्थिरता सुनिश्चित करते हुए सदस्य देशों के बीच पेट्रोलियम नीतियों का समन्वय और एकीकरण करना है।
- इसका मुख्यालय वियना, ऑस्ट्रिया में है।

यूएसआईईएफ

हाल ही में, यूनाइटेड स्टेट्स-इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन (USIEF) ने भारतीय नागरिकों के लिए फुलब्राइट-नेहरू और अन्य फुलब्राइट फ़ेलोशिप के लिए अपनी वार्षिक प्रतियोगिता शुरू करने की घोषणा की है।

यूएसआईईएफ के बारे में:

- यूनाइटेड स्टेट्स-इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन (USIEF) एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के लोगों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देना है।
- इसकी स्थापना 1950 में अमेरिकी सरकार के फुलब्राइट कार्यक्रम के हिस्से के रूप में की गई थी जो सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान के लिए एक अग्रणी कार्यक्रम है।
- यह फुलब्राइट फैलोशिप, अमेरिका और भारत में अध्ययन, संस्थागत सहयोग और फुलब्राइट-नेहरू प्रतियोगिता के साथ-साथ अमेरिका और भारतीय सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से वित्त पोषित फुलब्राइट-नेहरू फैलोशिप सहित कई प्रकार के कार्यक्रम प्रदान करता है।
- इसने अपनी स्थापना के बाद से लगभग हर शैक्षणिक क्षेत्र में लगभग 20,000 अनुदान और छात्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं।

ओरण

हालिया विवाद: *हाल ही में, राजस्थान सरकार के एक अधिसूचना ने ओरणों (पवित्र वन) को माना हुआ वन घोषित करने के प्रस्ताव को लेकर, स्थानीय समुदायों में वन संपदा और आजीविका के नुकसान की आशंका उत्पन्न हो गई है।*

ओरण क्या हैं?

- भारत में ओरण, जिन्हें पवित्र वन के रूप में भी जाना जाता है, जंगली क्षेत्रों या वनों के छोटे भूखंड होते हैं जो स्थानीय देवताओं या आत्माओं को समर्पित होते हैं।
- ये धार्मिक या सांस्कृतिक महत्व के कारण अक्सर समुदायों द्वारा संरक्षित किए जाते हैं।
- ओरणों का समुदायों के लिए अपार सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। ये पूजा, अनुष्ठान और समारोहों के स्थल के रूप में कार्य करते हैं।
- इन्हें पवित्र माना जाता है और ये अक्सर पीढ़ियों से चली आ रही किंवदंतियों, मिथकों और पारंपरिक मान्यताओं से जुड़े होते हैं।
- कम से कम मानवीय हस्तक्षेप के कारण, ये जैव विविधता के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं, जो अद्वितीय वनस्पति और जीवों का संरक्षण करते हैं।
- ओरण अक्सर मूल्यवान पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनमें औषधीय पौधे, लकड़ी, फल और गैर-काष्ठ वन उपज (NTFP) जैसे वन उत्पादों का प्रावधान शामिल है, जो स्थानीय समुदायों की आजीविका में योगदान करते हैं।

एल नीनो

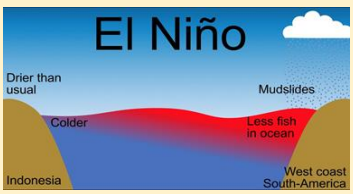

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, 2023-2024 का एल नीनो अबतक दर्ज किए गए पांच सबसे प्रबल घटनाओं में से एक के रूप में अपने चरम पर पहुंच गया है। कमजोर होने के संकेतों के बावजूद, जलवायु पर इसके प्रभाव अभी भी बने हुए हैं।

एल नीनो क्या है?

- एल नीनो मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान में समय-समय पर होने वाली असामान्य वृद्धि को संदर्भित करता है जिसके कारण दुनिया भर में महत्वपूर्ण जलवायु परिवर्तन होते हैं।
- एल नीनो घटनाएं औसतन हर दो से सात साल में होती हैं और प्रायः एक बार में नौ से 12 महीने तक चलती हैं।
- एल नीनो के दौरान औसत से अधिक गर्म समुद्र-सतह का तापमान सामान्य मौसम पैटर्न को बाधित कर देता है जिससे विभिन्न प्रकार की जलवायु संबंधी विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं।

	▪ यह हॉर्न ऑफ अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में वर्षा वृद्धि से सम्बद्ध है, जबकि दक्षिण पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका में शुष्क तथा गर्म परिस्थितियों का कारण बनता है। ▪ यह घटना भूमि क्षेत्रों पर सामान्य से अधिक तापमान का कारण बन सकती है और विश्व स्तर पर चरम मौसम घटनाओं में योगदान कर सकती है। ▪ यह न केवल मौसम के पैटर्न को प्रभावित करता है बल्कि कृषि उत्पादकता, जल संसाधनों और सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है जिससे दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाएं और समाज प्रभावित होते हैं।
सुर्खियों में स्थल **जापान**	*हाल ही में, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने लाल सागर क्षेत्र सहित बड़े क्षेत्र को लाभ पहुंचाने के लिए भारत और जापान को अपनी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।* **जापान (राजधानी: टोक्यो)** **अवस्थिति :** जापान पूर्वी एशिया में एक द्वीप देश है। **भौगोलिक सीमाएँ:** ▪ जापान प्रशांत महासागर (पूर्व), जापान सागर (पश्चिम), ओखोटस्क सागर (उत्तर) और पूर्वी चीन सागर (दक्षिण पश्चिम) से घिरा हुआ है। ▪ यह चीन, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, रूस, उत्तरी मारियाना द्वीप और ताइवान के साथ समुद्री सीमाएँ साझा करता है। **भौतिक विशेषताएं:** ▪ देश के उत्तर से दक्षिण तक पांच मुख्य द्वीप हैं होक्काइडो, होंशू, शिकोकू, क्यूशू और ओकिनावा। ▪ देश रिंग ऑफ फायर का हिस्सा है और भूकंप, सुनामी और ज्वालामुखी विस्फोट का खतरा है। ▪ माउंट फ़ूजी, या फ़ूजी-सान, जापान का सबसे ऊंचा और सबसे बड़ा सक्रिय ज्वालामुखी है

POINTS TO PONDER

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के दूसरे रॉकेट प्रक्षेपण स्थल की आधारशिला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 फरवरी, 2024 को कहाँ रखी थी? – **तमिलनाडु के थूथुकुडी में कुलसेकरपट्टिनम**
- हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव, 2024 में शीर्ष तीन पुरस्कार किसने जीते? – **हरियाणा से यतिन भास्कर दुग्गल (प्रथम पुरस्कार), तमिलनाडु से वैशना पिच्चाई (द्वितीय पुरस्कार) और राजस्थान से कनिष्का शर्मा (तृतीय पुरस्कार)**
- शिक्षा के प्रारंभिक (कक्षा 1 और 2), प्रारंभिक (कक्षा 3 से 5) और मध्य (कक्षा 6 से 8) चरणों के लिए समग्र प्रगति कार्ड (एचपीसी) को एनसीईआरटी के तहत किस मानक-निर्धारण निकाय द्वारा तैयार किया गया है? – **ज्ञान के समग्र विकास के लिए प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और विश्लेषण (पारख)**
- भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार कितने बैंक आरबीआई के यूडीजीएएम (लावारिस जमा - जानकारी प्राप्त करने का प्रवेश द्वार) पोर्टल का हिस्सा बन गए हैं? – **30**
- भारत की पहली शहर-विशिष्ट शून्य कार्बन भवन कार्य योजना (जेडसीबीएपी) हाल ही में कहाँ शुरू की गई थी? – **नागपुर**